सियाह हाशिए

सआदत हसन मंटो की लघुकथाएँ

लबलबी दबी पिस्तौल से झुँझलाकर गोली बाहर निकली।
खिड़की में से बाहर झाँकनेवाला आदमी उसी जगह दोहरा हो गया।
लबलबी थोड़ी देर के बाद फिर दबी– दूसरी गोली भिनभिनाती हुई बाहर निकली।
सड़क पर माशकी की मश्क फटी; वह औंधे मुँह गिरा और उसका लहू मश्क के पानी में हल होकर बहने लगा;
लबलबी तीसरी बार दबी–निशाना चूक गया; गोली एक गीली दीवार में जज़्ब हो गई।
चौथी गोली एक बूढ़ी औरत की पीठ में लगी; वह चीख़ भी न सकी और वहीं ढेर हो गई।
पाँचवीं और छठी गोली बेकार गई; कोई हलाक हुआ न ज़ख़्मी।
गोलियाँ चलानेवाला भिन्ना गया।
दफ़अतन सड़क पर एक छोटा-सा बच्चा दौड़ता हुआ दिखाई दिया।
गोलियाँ चलानेवाले ने पिस्तौल का मुँह उसकी तरफ़ मोड़ा।
उसके साथी ने कहा : ''यह क्या करते हो?''
गोलियाँ चलानेवाले ने पूछा : ''क्यों?''
''गोलियाँ तो ख़त्म हो चुकी हैं!''
''तुम ख़ामोश रहो... इतने-से बच्चे को क्या मालूम?''

– *इसी पुस्तक से*

© साहित्य उपक्रम

साहित्य उपक्रम
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क
गली नं. 1E, शाहदरा, दिल्ली–110 032

467, सेक्टर 9, फरीदाबाद
हरियाणा–121 006

email : sahitya_upkram@yahoo.co.in
Phone : 9350809192, 9818603345

ISBN : 978-81-8235-145-5

जनवरी 2018

लेजर टाइपसेटिंग
साहित्य उपक्रम

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली–32

आवरण
संयोजन : सुधीर वत्स

मूल्य : 40 रुपये

सियाह हाशिए

सआदत हसन मंटो की लघुकथाएँ

प्रस्तुति

अशोक भाटिया

साहित्य उपक्रम

साहित्य से दोस्ती

अनुक्रम

वक़्त की नब्ज़ टटोलता मंटो – अशोक भाटिया 5

सआदत हसन मंटो 8

जो मंटो ने कहा 11

मंटो के लेखन पर 13

1. सियाह हाशिए 17

1. साअते–शीरीं/19; 2. मज़दूरी/19; 3. तआवुन/22; 4. तक़सीम/24; 5. जायज़ इस्तेमाल/25; 6. बेख़बरी का फ़ायदा/26; 7. मुनासिब कार्रवाई/26; 8. करामात/27; 9. इस्लाह/28; 10. जैली/28; 11. दावते–अमल/29; 12. पठानिस्तान/29; 13. ख़बरदार/29; 14. हमेशा की छुट्टी/30; 15. हलाल और झटका/30; 16. घाटे का सौदा/30; 17. हैवानियत/31; 18. कस्रे–नफ़्सी/32; 19. खाद/32; 20. इस्तिक़्लाल/33; 21. निगरानी में/33; 22. जूता/34; 23. पेशबंदी/34; 24. सॉरी/35; 25. रिआयत/35; 26. सफ़ाई पसंदी/35; 27. सदक़े उसके/36; 28. इश्तिराकीयत/36; 29. उलाहना/37; 30. आराम की ज़रूरत/37; 31. क़िस्मत/38; 32. आँखों पर चर्बी/38

2. देख कबीरा रोया 39

3. अपनी–अपनी डफली 47

वक़्त की नब्ज़ टटोलता मंटो

—अशोक भाटिया

कथाकार मंटो की कुछ कहानियों को रुग्ण दृष्टि से देखकर उनकी छवि अश्लीलता परोसते लेखक की बनाने वाले भी हैं। एक 'रोमान' दृष्टि भी है, जिससे मंटों को 'अच्छा लेखक है' कहकर दरकिनार कर दिया गया है। सच्चाई दोनों से अलग है।

मंटों की राजनीतिक कहानियों और निम्नवर्ग की कहानियों पर बात नहीं की जाती। निम्नवर्ग के दैहिक सम्बन्धों को 'अश्लीलता' मानने वाले अपनी ही संकीर्ण दृष्टि के शिकार हैं। मंटो राजनीति का शिकार हुए लगते हैं। उनकी पाँच कहानियों पर मुकदमे चले, 'नंगी आवाज़ें' पर क्यों नहीं मुकदमा हुआ? कहने वाले तो शरत्चन्द्र के 'श्रीकान्त' उपन्यास को भी अश्लील कहते हैं, जबकि विधवा नारी को प्रेम करने का हक दिखाकर शरत् अपने समय से आगे हैं।

मंटो जब अमृतसर में बसा, तब वहाँ करीब पाँच हजार वेश्यायें हुआ करती थीं। क्या कोई लेखक उनकी जिन्दगी, परेशानियों, उनकी मानसिकता से मुँह मोड़ सकता था? 'खोल दो' कहानी अपने अन्तिम एक वाक्य में ही कई पात्रों की मानसिकता और गलाज़त को सामने लाकर रख देती है। दुखती रगपर उंगली लेखक नहीं तो फिर कौन रखेगा? आप फिर भी मंटों को अश्लील कहते हैं, तो फिर वह उर्दू का होने के बावजूद हिन्दी में इतना लोकप्रिय क्यों है? इस आधार पर होने के बावजूद हिन्दी में इतना लोकप्रिय क्यों है? इस आधार पर तो हमें सूरदास और बिहारी में कहीं अधिक अश्लीलता नज़र आनी चाहिए। सूर के काव्य को भक्ति के परदे में ढँककर जायज़ ठहरा दिया जाता है। लेकिन बिहारी तो कुचों (स्तनों), नितम्ब और सम्भोग तकका खुला वर्णन करके भी स्वीकृत हैं, बस मंटों ही स्वीकार्य नहीं है। इसके पीछे कुछ ग्रन्थियाँ हैं, विवेक नहीं।

'सियाह हाशिए' (1948) पर बात करने से पहले मंटो की बात सुन लें। वे कई सवालों का जवाब अपनी इस टिप्पणी में देते हैं— 'जिन्दगी को उसकी शक्ल में पेश करना चाहिए जैसी कि वह है, न कि वह जैसी थी या जैसी होगी

या होनी चाहिए।' विभाजन में जो कुछ हुआ, 'सियाह हाशिए' उसकी विकृतियों और विडम्बनाओं की चित्रशाला है। मंटो लिखते हैं—''मुल्क बँटबारे से जो इन्कलाब बरपा हुआ, उससे मैं एक अर्से तक बागी रहा और अब भी हूँ। लेकिन बाद में इस खौफ़नाक हकीकत को मैंने तसलीम कर लिया।'' उपेन्द्रनाथ अश्क ने भी 'मंटो मेरा दुश्मन' में लिखा है— 'जीवन के अनुभवों ने सम्भवत: उसे सहिष्णु और धैर्यवान बना दिया।'

इसके बावजूद एक आलोचक उनका मजाक उड़ाते हुए लिखता है— 'सियाह हाशिए' में मंटो ने लाशों की जेबों से सिगरेट के टुकड़े, अँगूठियाँ और इसी किस्म की चीजें निकालकर जमा की हैं। जबकि मंटो की पीड़ा देखिये— 'मैंने उस खून के समन्दर में गोता लगाया जो इन्सान ने इन्सान की रंगों में बहाया था और चन्द मोती चुनकर लाया अश्के-इनफ़आल (ग्लानि के आँसुओं) के मशक़्क़त (मेहनत) के जो उसने अपने भाई के खून का आखिरी कतरा बहाने में सर्फ की थी। उन आँसुओं के जो झुँझलाहट में कुछ इन्सानों की आँखों से निकले थे कि वे अपनी इन्सानियत क्यों खत्म नहीं कर सके...।' ('यज़ीद' के अन्तिम लेख 'ज़ेबे-कफन' से)

बलराज मेनरा और शरत दत्त ने मंटो पर अपने सम्पादित ग्रन्थ 'दस्तावेज' में 'सियाह हाशिए' के सभी अफ़सानचों (लघुकथाओं) को एक अफ़साना (कहानी) माना है, जो कि ठीक नहीं है। 'सियाह हाशिए' की सभी 32 लघुकथायें दंगे के विषय पर होने के बावजूद वे अलग-अलग हैं, एक कहानी की शक्ल अख्तियार नहीं करतीं। कबीर के एक ही विषय पर दो-तीन सौ दोहे इकट्ठे कर दें, तो वह खण्डकाव्य नहीं हो जायेगा। यही स्थिति 'सियाह हाशिए' के अफ़सानचों की है। पाकिस्तान से शाया 'मजमूआ-ए-मंटो' (तीसरा भाग) में छपी 'देख कबीर रोया' और 'अपनी-अपनी डफली' रचनायें भी अफ़साने में ही रखी गई हैं, जबकि इनकी क्रमश: 11 और 12 कथायें मुख़्तलिफ़ विषयों पर है। लगता है 'अफ़सानचा' (लघुकथा) लफ़्ज़ मंटो के समय में प्रचलित नहीं था। इस संकलन में इन लघुकथाओं को दो अलग खंडों में दिया है।

बेशक उपेन्द्रनाथ अश्क ने 'सियाह हाशिए' के अफ़सानों के बारे में कहा है कि 'इसके अधिकांश मोती आबदार नहीं, उनमें आँसुओं की नमी नहीं, सन्देहशीलता (scepticism) की बेआबी है।' इसके बावजूद वे 'करामात', 'मुनासिब कारवाई', 'सदके उसके' के व्यंग्य को अविस्मरणीय मानते हैं और

‘हैवानियत’, ‘कसरनफ़्सी’ और ‘सफाई पसन्दी’ को मंटो की झुँझलाहट, गुस्से, दर्दमन्दी और मानवप्रेम का द्योतक।

दरअसल, मंटो बिना वजह की परतें अपनी रचनाओं में डालने के पक्ष में नहीं, वे तो परतें उघाड़ने में विश्वास रखते हैं। उनके ये 55 अफ़सानचे उनके बारे में बनाये संकीर्ण मत के ठीक विपरीत पड़ते हैं। फिर चाहे वह ‘बेखबरी का फायदा’ और ‘मुनासिब कारवायी’ में दिखायी क्रूरता और संवेदनहीनता हो, या ‘करामात’ में दिखाया गया अन्धविश्वास हो; ‘इस्लाह’ के दंगे हों या कि ‘सफाई पसन्दी’ में दिखायी विडम्बना हो। मज़हबपरस्ती में हिंसा की जड़ें कितनी गहरी हैं और इसका जहरीला पेड़ अपनी शाखा-प्रशाखायें कहाँ-कहाँ ले जाकर जहर उगलता है—इसे ‘सयाह हाशिए’ के अफ़सानचे (लघुकथाएँ) बड़े कम लफ़्ज़ों में कहीं तंज (व्यंग्य) के साथ, तो कहीं व्यंजना के साथ उघाड़कर रख देते हैं। सुलतान अहमद अपने लेख—‘मंटो : एक कहानीकार, जो हौलनाक हकीकतों में ही खिलता था’ में लिखते हैं— ‘‘इसमें कोई शक नहीं कि ‘ठण्डा गोश्त’, ‘सहाय’, ‘रामखिलावन’, ‘यजीद’, ‘गुरुमुख सिंह की वसीयत’, ‘टिटवाल का कुत्ता’, ‘खोल दो’, ‘शरीफ़न’, ‘खुदा की कसम’, ‘मूतरी’ और ‘टोबा टेकसिंह’ वग़ैरह कहानियाँ ‘सियाह हाशिए’ की कहानियों से ज्यादा तहदार हैं, लेकिन फ़िरक़ापरस्ती के खिलाफ लिखी गयी ये सारी कहानियाँ कुल मिलाकर एक ही कहानी या कह लें कि उन सभी के लिए एक ही उन्वान बनाती हैं और वो है ‘सियाह हाशिए’। ‘सियाह हाशिए’ यानी हौलनाक फ़िरक़ापरस्ती के हौलनाक माहौल की हौलनाक कहानी। बिना हौलनाक हकीकतों के बीच खड़े हुए मंटो खिलता कहाँ था?’’

मंटो सैंतालीस के दंगे-फसादों पर ‘टोबा टेकसिंह’ और ‘टिटवाल का कुत्ता’ (मोहन राकेश की प्रसिद्ध कहानी ‘मलबे का मालिक’ की याद कराती हैं) कहानियाँ लिखने के बावजूद ‘सियाह हाशिए’ को लिखे बिना नहीं रह पाए। इससे विभाजन की त्रासदी को लेकर मंटो की निरन्तर बेचैनी और पीड़ा का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। इन रचनाओं में जो तल्ख़ी है, वही मंटो का अलग मुकाम है।

—1882, सेक्टर 13,
करनाल-132001
94161-52100
ashokbhatiahes@gmail.com

सआदत हसन मंटो

जन्म : 11.5.1912 समराला, जिला लुधियाना (पंजाब) जन्म पुश्तैनी बैरिस्टरों के परिवार में हुआ।

निधन : 18.1.1955 को जब लाहौर में मंटो का अधिक मदिरापान से इंतकाल हुआ, तो उनकी लिखी हुई फिल्म 'मिर्ज़ा ग़ालिब' दिल्ली में हाउसफुल जा रही थी।

शिक्षा : मुस्लिम हाई स्कूल अमृतसर, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी। उर्दू में कमजोर होने के कारण एंट्रेंस में दो बार फेल हुए।

- 1933 में अब्दुलबारी अलीग नामक पत्रकार के मशविरे पर रूसी के साथ फ्रांसीसी साहित्य भी पढ़ना शुरू किया। विक्टर ह्यूगो, लार्ड लिटन, मैक्सिम गोर्की,अन्तोन चेखव, पुश्किन, ऑस्कर वाइल्ड, मोपासां आदि का अध्ययन किया।
- जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड पर पहली कहानी 'तमाशा' 1931 में लिखी।
- मंटो का साहित्यिक जीवन ला–मिज़राव और गोर्की की उन कहानियों के अनुवाद से शुरू हुआ, जो मनुष्य के दुखी जीवन की गाथा थीं। – देवेन्द्र इस्सर
- 1936 में पहला उर्दू कहानी संग्रह 'आतिशपारे' प्रकाशित हुआ।
- अलीगढ़ में करीब एक वर्ष रहकर अमृतसर, फिर लाहौर चले गए। वहाँ 'मुसव्विर' (साप्ताहिक) का सम्पादन किया।
- 1940–42 के करीब ढाई वर्ष ऑल इण्डिया रेडियो दिल्ली में काम किया। यहाँ रहकर उन्होंने करीब सौ रेडियो नाटक लिखे, जिनके चार संग्रह छपे–आओ, मंटो के ड्रामे, जनाज़े, तीन औरतें।
- मंटो ने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर एक ड्रामेटिक क्लब खोला। आगा हश्र का नाटक प्रस्तुत करने की तैयारी कर रहे थे कि पिता ने क्रोध में सामान तोड़–फोड़ दिया।
- जुलाई 1942 में वे लाहौर से बम्बई आ गए, जहाँ 1948 तक रहे। 1948

के बाद पाकिस्तान चले गए। वहाँ उनके 14 कहानी–संग्रह छपे, जिनमें 161 कहानियाँ हैं।

- मंटो ने कार्ल मार्क्स पर रेडियो नाटक लिखा और मैक्सिम गोर्की पर लेख। उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन और उसके बाद आइज़न हावर के नाम कुल नौ खत लिखे। इनमें अमेरिका की साम्राज्यवादी नीतियों की आलोचना की गयी है।
- मुम्बई के अपने पहले और दूसरे प्रवास में मंटो ने साहित्यिक लेखन के अलावा फिल्मी पत्रकारिता की और फिल्मों के लिए कहानियाँ व पटकथायें लिखीं, जिनमें 'अपनी नगरिया', 'आठ दिन' व 'मिर्ज़ा ग़ालिब' खासतौर पर चर्चित रहीं।
- मंटो की पाँच कहानियों पर मुकदमे चले, पहली तीन पर भारत में और बाद की दो कहानियों पर पाकिस्तान में। 'काली सलवार' 1942 में 'अदब–ए–लतीफ' में छपी, जिस पर मुकदमा चला। इसी पत्रिका के 1944 के वार्षिक अंक में 'बू' कहानी छपी। इस पर चले मुकदमे को सरदार जाफरी ने पहले तो 'अदब और तहज़ीब पर हमला' माना, बाद में ऐसी कहानियों को बीमार और घिनौनी चीजें कहकर लेखक को प्रतिक्रियावादी कहा। 'धुआँ' कहानी मंटो के पहले कहानी संग्रह 'धुआँ' में थी, जिस पर 200 रुपये जुर्माना लगा। बाद में अपील पर जुर्माना वापिस हुआ।
  'ठण्डा गोश्त' मार्च 1949 में 'जावेद' के विशेषांक में छपी। अंक ज़ब्त हो गया। निकट मित्रों ने कहानी छापने से इन्कार कर दिया। मुकदमे में तीन मास का सश्रम कारावास हुआ। जमानत मिली, अपील पर बरी हो गये। मंटो की कहानी 'ऊपर नीचे दरमियान' पर कराची में मुकदमा चला और 25 रुपये जुर्माना हुआ।
- मंटो ने 1931 से 1947 क 70 से अधिक कहानियाँ लिखीं। इनमें नया कानून, हतक, धुआँ, डरपोक, बू, काली सलवार, बाबू गोपीनाथ बहुत प्रसिद्ध हुईं। 1948 से 1955 के बीच मंटो ने 165 से अधिक कहानियाँ लिखीं। इनमें ठण्डा गोश्त, खोल दो, टोबा टेकसिंह, शरीफन, नंगी आवाजें, सियाह हाशिए (32 अफसानचे) आदि आती हैं। मंटो का साहित्यिक जीवन कुल 25 वर्षों का रहा। डॉ. राजेन्द्र टोकी के पास मंटो की 270 कहानियाँ उपलब्ध हैं।
- मंटो के कुल 21 कहानी संग्रह और एक अफसानचा (लघुकथा) संग्रह

मिलता है, जिनकी सूची इस प्रकार है–
आतिशपारे 1936, चुगद, मंटो के अफसाने 1940, धुआँ 1941, अफसाने और ड्रामे 1943, लज्ज़त–ए–संग 1948, स्याह हाशिए (अफसानचे) 1948, बादशाहत का खात्मा 1950, खाली बोतलें 1950, लाउड स्पीकर (स्कैच), गंजे फरिश्ते (स्कैच), मंटो के मज़ामीन, नमरुद की खुदाई 1950, ठण्डा गोश्त 1950, याज़िद 1951, पर्दे के पीछे 1953, सड़क के किनारे 1953, बग़ैर उनवान के (बिना शीर्षक के) 1954, बग़ैर इजाजत 1955, बुर्के 1955, सरकण्डों के पीछे 1955, शैतान 1955, शिकारी औरतें 1955, रत्ती, माशा तोला 1956, काली सलवार 1961, मंटो की बेहतरीन कहानियाँ 1963, ताहिरा से ताहिर 1971।

मंटो के साहित्य पर कुछ जरूरी किताबें

- मंटोनामा (प्रथम संस्करण 1991)
  सम्पादक : देवेन्द्र इस्सर
  इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
- मंटो : अदालत के कटघरे में (प्रथम संस्करण 1991)
  सम्पादक : देवेन्द्र इस्सर
  इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
- दस्तावेज (पाँच भाग) (प्रथम संस्करण 1993)
  सम्पादक : बलराज मेनरा, शरत दत्त
  राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- मजमूआ–ए–मंटो (उर्दू)
  (प्रथम संस्करण : 2014)
  सम्पादक का उल्लेख नहीं
  ज़ुबैर बुक्स, लाहौर
- अजब आज़ाद मर्द था
  अतिथि सम्पादक : जानकी प्रसाद शर्मा
  'उद्‌भावना' की ओर से 2016 में प्रकाशित
- मंटो : नए पहलू (प्रथम संस्करण 2017)
  लेखक : डॉ. राजेन्द्र टोकी
  भारत पुस्तक भंडार, दिल्ली

जो मंटो ने कहा

- *जिन्दगी को उसकी शक्ल में पेश करना चाहिए जैसी कि वह है, न कि वह जैसी थी या जैसी होगी या जैसी होनी चाहिए।*
- मैं लिखता हूँ इसलिए कि मुझे कुछ कहना होता है। मैं लिखता हूँ इसलिए कि कुछ कमा सकूँ, ताकि मैं कुछ कहने के काबिल हो सकूँ। जाहिर तौर पर रोटी और कला का रिश्ता अजीब-सा मालूम होता है, लेकिन क्या किया जाये कि खुदावन्द ताला को यही मंजूर है। वह खुद को हर चीज़ से निरपेक्ष कहता है—यह गलत है। वह निरपेक्ष और निर्लेप हरगिज़ नहीं है। उसको इबादत चाहिए और इबादत बड़ी ही नर्म और नाजुक रोटी है—बल्कि यूँ कहिये चुपड़ी हुई रोटी है...।
- *मैं उस संस्कृति और सभ्यता और समाज की चोली क्या उतारूँगा, जो खुद ही नंगी है। मैं इसे कपड़े पहनाने की कोशिश भी नहीं करता। इसलिए कि यह मेरा काम नहीं दर्जियों का है। लोग मुझे स्याह-कलम कहते हैं, लेकिन मैं स्याह तख्ती पर काले चाक से नहीं लिखता। मैं सफेद चाक का इस्तेमाल इसलिए करता हूँ कि तख्ता-स्याह की स्याही और स्पष्ट हो जाए।*
- मुझमें जो बुराइयाँ हैं वो इस युग की बुराइयाँ हैं। मेरी तहरीर में कोई नुक्स नहीं। जिस नुक्स को मेरे नाम से जोड़ा जाता है, दरअसल मौजूदा निज़ाम का नुक़्स है...।
- *हिन्दुस्तान को उन लीडरों से बचाओ जो मुल्क की फ़िज़ा बिगाड़ रहे हैं और आवाम को गुमराह कर रहे हैं।...यह लीडर खटमल हैं जो वतन की खाट में चूलों के अन्दर घुसे हुए हैं। इनको नफरत के उबलते हुए पानी के जरिये बाहर निकाल देना चाहिए। —('हिन्दुस्तान को लीडरों से बचाओ' लेख से)*
- मैं ऐसी दुनिया, ऐसे सभ्य देश को और ऐसे सभ्य समाज को धिक्कारता हूँ जहाँ ऐसे रिवाज़ प्रचलित हैं कि मरने के बाद प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र को लांड्री में भेज देते हैं और धुले-पुंछे शरीर को देवताओं की तरह खूंटी

से लटका दिया जाता है।

- *लोग कला को इतना ऊँचा रुतबा देते हैं कि उसके झण्डे सातवें आसमान से मिला देते हैं। मगर क्या यह हक़ीक़त नहीं कि हर श्रेष्ठ और महान चीज़ एक सूखी रोटी की मोहताज है?*
- चक्की पीसने वाली औरत जो दिनभर काम करती है और रात को इत्मीनान से सो जाती है, मेरे अफसानों की हीरोइन नहीं सो सकती है। मेरी हीरोइन चकले की एक टखयाई रंडी हो सकती है, जो रात को जागती है और दिन को सोते में कभी-कभी यह डरावना ख्वाब देखकर उठ बैठती है कि बुढ़ापा उसके दरवाजे पर दस्तक देने आ रहा है। उसके भारी-भारी पपोटे, जिनमें वर्षों की उचटी हुई नींद जम गई है, मेरे अफ़सानों का मौजूँ (विषय) बन सकते हैं। उसकी गलाज़त, उसकी बीमारियाँ, उसका चिड़चिड़ापन, उसकी गालियाँ—ये सब मुझे भाती हैं—मैं उसके मुताल्लिक लिखता हूँ और घरेलू औरतों की शस्ताकलामियाँ, उनकी सेहत और उनकी नफ़ासत पसन्दी को नजरअन्दाज कर जाता हूँ।
- *सआदत हसन मंटो लिखता है इसलिए कि यह खुदा जितना बड़ा अफ़सानासाज़ और शायर नहीं, यह उसकी अजिजी जो उससे लिखवाती है।*
- मैं जानता हूँ कि मेरी शख्सियत बहुत बड़ी है और उर्दू साहित्य में मेरा बड़ा नाम है। मगर यह खुशफ़हमी न हो तो जिन्दगी और भी मुश्किल बन जाए, पर मेरे लिए यह एक तल्ख हकीकत है कि अपने मुल्क में, जिसे पाकिस्तान कहते हैं, मैं अपना सही स्थान नहीं ढूँढ पाया हूँ। यही वजह है कि मेरी रूह बेचैन रहती है। मैं कभी पागलखाने में और कभी अस्पताल में रहता हूँ।
- *मैं समझता हूँ कि जिन्दगी अगर परहेज से गुजारी जाए तो एक क़ैद है। अगर वह बदपरहेज़ियों से गुजारी जाये तो भी एक कैद है। किसी न किसी तरह हमें इस जुराब के धागे का एक सिरा पकड़कर उधेड़ते जाना है और बस।*

मंटो के लेखन पर

- उर्दू कहानी में मंटो यथार्थवाद की परम्परा का अनुयायी था। वह उन कुछ कहानीकारों में से है जो कहानी में फज़ा का निर्माण और पात्रों के चित्रण के लिए अर्थहीन तफ़सीलों और लम्बे-चौड़े बयानों की बजाय शब्दों के अल्प प्रयोग से काम लेते हैं। रचना की यह खूबी उस आत्मविश्वास से पैदा होती है जिसके होने और न होने से कहानी बल्कि कोई भी रचना कहीं से कहीं जा पहुँचती है। **— सलीम अख्तर**
- मंटो में तल्ख़ सच्चाई को देखने, उसे परखने और फिर उसको खुलकर प्रकट करने का साहस था। वह सच बात कहने के हक़ के लिए तमाम उम्र लड़ता रहा। इस सन्दर्भ में उसने न तो मज़हबी लानतान की परवाह की, न ही मुकदमों की। यहाँ तक कि वह समय भी आ गया कि उसके साथी तरक्की पसन्दों ने भी उसे अपनी बिरादरी से निकाल बाहर किया। लेकिन वह अपने रास्ते पर बेख़ौफ़ चलता रहा। **— सलीम अख्तर**
- उसमें (मंटो में) इतना धैर्य नहीं था कि अन्याय और अत्याचार को सह सके। इसीलिए वह कहानियों के माध्यम से चिल्लाया और सदियों की सोई आत्माओं को झकझोरने के लिए उर्दू साहित्य में आतंककारी बन उठा। **— हाज़रा मसरूर**
- मंटो साहब का सबसे बड़ा जिन्दा रहने वाला कारनामा यह है कि उन्होंने उर्दू साहित्य में पहली बार गम्भीरता के साथ गिरे हुए वर्ग को शामिल होने दिया और फतवा देने की बजाय उस वर्ग के साथ-साथ नज़र आये। **— हाज़रा मसरूर**
- उपमहाद्वीप में अदब का जो 'अण्डर-वर्ल्ड' है, उसका वह उम्दा चित्रकार था। **— कुर्रतुल-ऐन-हैदर**
- उर्दू साहित्य में एक ही मंटो है और एक ही बेदी है। दूसरे लेखकों की मिलती-जुलती तस्वीरें आप कहीं-न-कहीं जरूर देख सकते हैं। **— कृश्नचन्दर**

- उन्होंने केवल भौतिक शरीर को सम्पूर्ण महत्व दे दिया और चिन्तन और कल्पना को घर-निकाला दे दिया। वह भूत और वर्तमान के दास बनकर रह गए। भविष्य से उनका कोई सरोकार न रहा। **—हनीफ़ रामे**
- मंटो मानसिक तौर पर शायद मौजूदा दौर का सबसे अधिक सशक्त और सेहतमंद लेखक है। **—आबिद अली आबिद**
- वह (मंटो) संवेदनशील था इसलिए दो बार पागलखाने गया। बेबाक था, इसलिए कई बार अदालत के सामने खड़ा हुआ। तुनक-मिज़ाज था इसलिए दुश्मनों से टकराता रहा। स्वाभिमानी था इसलिए भूखा मरता रहा। आदि से प्यासा था इसलिए शराब पीता रहा और जिन्दा रहने की ताब न ला सका इसलिए मर गया। लेकिन कलाकार था इसलिए मरकर भी जिन्दा है। आप आखिर पूछेंगे, वह बदजबान क्यों था? इसलिए कि समाज ने उससे बदजबानी की थी और उस जैसे लाखों-करोड़ों इन्सानों से बदज़बानी की थी। इसकी बदज़बानी से नुकसान कम पहुँचा है, फायदा अधिक हुआ है। मंटो की बदज़बानी हमारे साहित्य की मूल्यवान निधि है जिसे हम जीवित रखेंगे—जो हमें जीवित रखेगी।

  — सरदार जाफ़री
- मंटो की अफ़साना निगारी हिन्दुस्तान के दरम्यानी तबके के मुजरिम ज़मीर की फ़रियाद है। इसलिए मंटो उर्दू का सबसे ज्यादा बदनाम अफ़सानानिगार है और वह बदनामी जो मंटो को नसीब हुई है, मक़्बूलियत और शुहरत की तरह, सिर्फ कोशिश से हासिल नहीं की जा सकती। इसके लिए फ़नकार में असली जौहर होना चाहिए और मंटो का जौहर उसके क़लम की नोंक पर नगीने की तरह चमकता है। **—सरदार जाफ़री**
- मैं नहीं जानता, मंटो पर चेखव का प्रभाव था या नहीं, लेकिन एक ओर गोर्की और दूसरी ओर मॉम और उसके सहारे मोपासां का प्रभाव उस पर अवश्य था। लेकिन इसके बावजूद उसकी तकनीक उसकी अपनी थी। गोर्की से उसने मानव-प्रेम और पद-दलित लोगों के प्रति स्नेह और प्रगतिशील दृष्टिकोण लिया और मॉम या मोपासां से तकनीक का कमाल। मंटो यदि जीवित रहेगा तो तकनीक के इस कमाल के कारण नहीं, बल्कि उस मानव-प्रेम के कारण जो इसकी कहानियों की नस-नस में रचा हुआ है। **— उपेन्द्रनाथ अश्क**

- मंटो अगर मोपासां वगैरह के बराबर नहीं पहुँच सका तो इसमें कुसूर खुद मंटो का न था जितना उस साहित्यिक परम्परा का जिसमें वह पैदा हुआ। जिस बात में मंटो मोपासां से पीछे रह जाता है, वह मोपासां का गद्य है। और मोपासां को जिस किस्म का गद्य दरकार था वह फ्रांस में और कुछ नहीं तो दो सौ साल से विकसित हो रहा था। मोपासां के पीछे रोश फूको था, वालेयर था, अस्ताँदाल थ, फ्लाबेयर था। मंटो के पीछे कौन था?

  — मुहम्मद हसन असकरी

- अगर हमें झिंझोड़कर जगाने के बाद मंटो ने मानवीय स्वभाव और समाज का कोई तमाशा नहीं दिखाया, अगर उसने हमारे अन्दर जिन्दगी की कोई नयी चेतना जागृत नहीं की तो हमारा उसे गालियाँ देना सर्वथा उचित है– कि उसने हमें चैन से सोने भी नहीं दिया। जो लोग किसी कीमत पर जागना ही नहीं चाहते, उन्हें तो उनके हाल पर छोड़िए, लेकिन क्या आप 'नया क़ानून', 'हतक', 'बाबू गोपीनाथ' जैसी कहानियाँ पढ़ने के बाद ईमानदारी के साथ कह सकते हैं कि मंटो ने हमें चौंका कर मुफ़्त में हमारी नींद खराब की?

  — मुहम्मद हसन असकरी

- मंटो अपने छोटे–से–छोटे भाव या संवेदन को दबाने का कायल न था। हर चीज उसके अन्दर कोई न–कोई प्रतिक्रिया पैदा करती थी और वह उस प्रतिक्रिया को स्वीकार कर लेता था। इन छोटे–छोटे और सामयिक अनुभवों को एक–दूसरे से सम्बद्ध या गड्डमड्ड करते रहने की आदत उसमें न थी। सामयिक प्रतिक्रिया को वह इतना दिलचस्प और ज़रूरी समझता था कि उस पर कलात्मक अपेक्षाओं को कुर्बान कर देता था। इसीलिए उसकी कहानियाँ कभी भी बहुत अच्छी होती थीं, कभी बहुत बुरी।

  — मुहम्मद हसन असकरी

सियाह हाशिए

1. साअते-शीरीं[1]

नई दिल्ली, जनवरी 31 (ए पी) : इत्तिला[2] मौसूल[3] है कि
महात्मा गाँधी की मौत पर इज़हारे-मसर्रत[4] के लिए अमृतसर,
ग्वालियर और बंबई में कई जगह लोगों में शीरीनी[5] बाँटी गई।

1. मीठा (मधुर) पल; 2. सूचना; 3. प्राप्त; 4. प्रसन्नता व्यक्त करना; 5. मिठाई।

2. मज़दूरी

लूट-खसोट का बाज़ार गर्म था।
फिर चारों तरफ आग भड़कने लगी।
गर्मी में इज़ाफ़ा[1] हो गया।

एक आदमी हारमानियम की पेटी उठाए ख़ुश-ख़ुश गाता जा रहा था :

जब तुम ही गए परदेस
लगाकर ठेस
ओ पीतम प्यारा
दुनिया में कौन हमारा...

एक छोटी उम्र का लड़का झोली मे पापड़ों का अंबार डाले भागा जा रहा था—ठोकर लगी तो पापड़ों की एक गड्डी उसकी झोली में से गिर पड़ी।

लड़का उसे उठाने के लिए झुका तो एक आदमी ने, जिसने सर पर सिलाई की मशीन उठाई हुई थी, उससे कहा : "रहने दे बेटा, रहने दे... अपने आप भुन जाएँगे..."

बाज़ार में धप्प से एक भरी हुई बोरी गिरी।

एक शख़्स ने जल्दी से बढ़कर अपने छुरे से उसका पेट चाक किया—

आँतों के बजाय शक्कर, सफ़ेद-सफ़ेद दानोंवाली शक्कर बाहर निकल आई।

लोग जमा हो गए और अपनी-अपनी झोलियाँ भरने लगे।

एक आदमी कुरते के बग़ैर था। उसने जल्दी से अपना तहबंद खोला और मुट्ठियाँ भर-भरकर उसमें डालने लगा।

''हट जाओ... हट जाओ...'' एक ताँगा ताज़ा-ताज़ा रौग़नशुदा अलमारियों से लदा हुआ गुज़र गया।

ऊँचे मकान की खिड़की में से मलमल का थान फड़फड़ाता हुआ बाहर निकला।

शोले की ज़ुबान ने हौले-से उसे चाटा।

सड़क तक पहुँचा तो वह राख का एक ढेर था।

''पौं-पौं...पौं-पौं... मोटर के हॉर्न की आवाज़ के साथ दो औरतों की चीख़ें भी थीं।

लोहे का एक सेफ़ दस-पन्द्रह आदमियों ने खींचकर बाहर निकाला और लाठियों की मदद से उसे खोलना शुरू कर दिया।

एक बुलंद आवाज़ आई : ''गर्मी का मौसम है...आओ, लेमूनेड पियो...!''

गले में मोटर का टायर डाले हुए आदमी ने बढ़कर दो बोतलें उठाईं और शुक्रिया अदा किए बग़ैर चल दिया।

एक आवाज़ आई : ''कोई आग बुझानेवालों को इत्तिला दे दे... वरना सारा माल जल जाएगा।''

किसी ने इस मुफ़ीद[1] मश्वरे[2] की तरफ़ कोई तवज्जोह[3] नहीं दी।

लूट-खसोट का बाज़ार इसी तरह गर्म रहा, और चारों तरफ़ भड़कती हुई आग उस गर्मी में इज़ाफ़ा करती रही।

फिर बहुत देर के बाद तड़-तड़ की आवाज आई– गोलियाँ चलने लगीं।

पुलिस को बाज़ार ख़ाली नज़र आया– लेकिन दूर, धुएँ में मल्फ़ूफ़[4] मोड़ के पास एक साया-सा था।

सिपाही सीटियाँ बजाते उस तरफ लपके।

साया तेज़ी से धुएँ के अंदर घुस गया।

सिपाही भी तआक़ुब[5] में लगे रहे।

धुएँ का इलाक़ा ख़त्म हुआ तो सिपाहियों ने देखा कि एक कश्मीरी मज़दूर पीठ पर वज़नी बोरी उठाए भागा चला जा रहा है।

सीटियों के गले ख़ुश्क हो गए मगर वह कश्मीरी मज़दूर न रुका... उसकी पीठ पर वज़न था; मामूली वज़न नहीं; एक भरी हुई बोरी थी लेकिन वह यूँ दौड़ रहा था जैसे उसकी पीठ पर कुछ है ही नहीं।

सिपाही हाँपने लगे– एक ने तंग आकर पिस्तौल निकाला और दाग़ दिया।

गोली कश्मीरी मज़दूर की पिंडली में लगी। बोरी उसकी पीठ पर से गिर पड़ी।

घबराकर उसने अपने पीछे आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ते हुए सिपाहियों को देखा; पिंडली से बहते हुए ख़ून की तरफ़ भी उसने ग़ौर किया। फिर एक ही झटके से बोरी उठाई, पीठ पर लादी और लँगड़ाते-लँगड़ाते भागने लगा।

थके हुए सिपाहियों ने सोचा : ''जाए जहन्नम में...''

उसी वक्त कश्मीरी मज़दूर लड़खड़ाया और गिर पड़ा। बोरी उसके ऊपर आन पड़ी।

अब थके-हारे सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया; फिर बोरी उस पर लादकर थाने की तरफ़ चलने लगे।

रास्ते में कश्मीरी मज़दूर ने बारहा कहा : ''हज़रत, आप मुझे क्यों पकड़ती... मैं तो ग़रीब आदमी होती... चावल की एक बोरी लेती... घर में खाती... आप नाहक़ मुझे गोली मारती...''

लेकिन उसकी एक न सुनी गई।

थाने में भी कश्मीरी मज़दूर ने अपनी सफ़ाई में कहा : ''हज़रत, दूसरा लोग बड़ा-बड़ा माल उठाती... मैं तो फ़क़त चावल की एक बोरी लेती... हज़रत, मैं ग़रीब होती... हर रोज़ भात खाती...''

जब वह थक-हार गया तो उसने अपनी मैली टोपी से माथे का पसीना पोंछा और चावल की बोरी की तरफ़ हसरत भरी निगाहों से देखते हुए थानेदार के आगे हाथ फैलाए : ''अच्छा, हज़रत, तुम बोरी अपने पास रखती... मैं अपनी मजदूरी माँगती...चार... आने!''

1. लाभदायक; 2. सुझाव; 3. ध्यान; 4. लिपटे हुए; 5. पीछा करना

3. तआवुन[1]

चालीस-पचास लठबंद आदमियों का एक गिरोह लूट-मार के लिए एक मकान की तरफ़ बढ़ रहा था।

दफ़्अतन[2] उस भीड़ को चीरकर एक दुबला-पतला अधेड़ उम्र का आदमी बाहर निकला। पलटकर वह बलवाइयों से लीडराना अंदाज़ में मुख़ातिब हुआ : ''भाइयो, इस मकान में बेअंदाज़ा दौलत है, बेशुमार क़ीमती सामान है... आओ हम सब मिलकर इस पर क़ाबिज़[3] हो जाएँ और माले-ग़नीमत[4] आपस में बाँट लें।''

हवा में कई लाठियाँ लहराईं, कई मुक्के भिंचे और बुलंद-बाँग नारों का एक फ़व्वारा-सा छूट पड़ा।

चालीस-पचास लठबन्द आदमियों का गिरोह-दुबले-पतले अधेड़ उम्र के आदमी की क़यादत[5] में उस कमान की तरफ तेज़ी से बढ़ने लगा, जिसमें बेअंदाज़ा दौलत और बेशुमार क़ीमती सामान था।

मकान के सदर दरवाज़े के पास रुककर दुबला-पतला आदमी फिर बलवाइयों से मुख़ातिब हुआ : ''भाइयो, इस मकान में जितना भी माल है, सब तुम्हारा है... देखो, छीना-झपटी नहीं करना, आपस में नहीं लड़ना, आओ!''

एक चिल्लाया : ''दरवाज़े में ताला है।''

दूसरे ने बआवाज़े बुलंद कहा : ''तोड़ दो।''

''तोड़... तोड़ दो।'' हवा में कई लाठियाँ लहराईं, कई मुक्के भिंचे और बुलंद-बाँग नारों का एक फ़व्वारा-सा छूट पड़ा।

दुबले-पतले आदमी ने हाथ के इशारे से दरवाज़ा तोड़नेवालों को रोका और मुसकराकर कहा : ''भाइयो, ठहरो... मैं इसे चाबी से खोलता हूँ।''

यह कहकर उसने जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला और एक चाबी मुंतख़ब[6] करके ताले में डाली और उसे खोल दिया—शीशम का भारी-भरकम दरवाज़ा एक चीख़ के साथ वा[7] हुआ, तो हुजूम दीवानावार अंदर दाख़िल होने के लिए आगे बढ़ा।

दुबले-पतले आदमी ने माथे का पसीना अपनी आस्तीन से पोंछते हुए कहा : ''भाइयो, आराम से... जो कुछ इस मकान में है, सब तुम्हारा है... फिर इस अफ़रा-तफ़री की क्या ज़रूरत है।

फ़ौरन ही हुजूम में ज़ब्त पैदा हो गया— एक-एक करके बलवाई मकान

के अंदर दाख़िल होने लगे, लेकिन ज्यों ही चीज़ों की लूटमार शुरू हुई, फिर धाँधली मच गई। बड़ी बेरहमी से बलवाई क़ीमती चीज़ों पर हाथ साफ़ करने लगे।

दुबले-पतले आदमी ने जब यह मंज़र देखा तो बड़ी दुख भरी आवाज़ में लुटेरों से कहा : ''भाइयो, आहिस्ता-आहिस्ता... आपस में लड़ने-झगड़ने की कोई ज़रूरत नहीं... नोच-खसोट की भी कोई ज़रूरत नहीं... तआवुन से काम लो। अगर किसी के हाथ ज़्यादा क़ीमती चीज़ आ गई है तो हासिद[8] मत बनो... इतना बड़ा मकान है, अपने लिए कोई और चीज ढूँढ़ लो... मगर वहशी[9] न बनो... मार-धाड़ करोगे तो चीज़ें टूट जाएँगी... इसमें नुक़सान तुम्हारा ही है...''

लुटेरों में एक बार फिर नज़्म[10] पैदा हो गया, और भरा हुआ मकान आहिस्ता-आहिस्ता ख़ाली होने लगा।

दुबला-पतला आदमी वक़्तन-फ़वक़्तन[11] हिदायत देता रहा : ''देखो भैया, यह रेडियों है... ज़रा आराम से उठाओ, ऐसा न हो कि टूट जाए... इसके तार भी साथ लेते जाओ...''

''तह कर लो भाई, इसे तह कर लो... अख़रोट की लकड़ी की तिपाई है, हाथीदाँत की पच्चीकारी है, बड़ी नाज़ुक चीज़ है... हाँ अब ठीक है...''

''नहीं-नहीं, यहाँ मत पियो... बहक जाओगे... इसे घर ले जाओ...''

''ठहरो-ठहरो, मुझे मेन स्विच बंद कर लेने दो... कहीं करंट से धक्का न लग जाए...''

इतने में एक कोने से शोर बुलंद हुआ– चार बलवाई रेशमी कपड़े के एक थान पर छीना-झपटी कर रहे थे।

दुबला-पतला आदमी तेज़ी से उनकी तरफ़ बढ़ा और मलामत[12] भरे लह्जे में उनसे कहने लगा : ''तुम लोग कितने बेसमझ हो... चिंदी-चिंदी हो जाएगी ऐसे क़ीमती कपड़े की... घर में सब चीज़ें मौजूद हैं, गज़ भी होगा... तलाश करो और नापकर कपड़ा आपस में तक़सीम[13] कर लो...''

दफ़्अतन[14] एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई : अफ़-अफ़-अफ़...

और चशमे-ज़दन[15] में एक बहुत बड़ा गद्दी कुत्ता एक जस्त के साथ अंदर लपका, और लपकतते ही उसने दो-तीन लुटेरों को भँभोड़ दिया।

दुबला-पतला आदमी चिल्लाया : ''टाइगर... टाइगर...''

टाइगर, जिसके मुँह में एक लुटेरे का नुचा हुआ गिरेबान था, दुम हिलाता हुआ दुबले-पतले आदमी की तरफ़ निगाहें नीची किए क़दम उठाने लगा।

टाइगर के आते ही सब लुटेरे भाग गए थे, सिर्फ़ एक लुटेरा बाक़ी रह गया था, जिसके गिरेबान का टुकड़ा टाइगर के मुँह में था।

उसने दुबले-पतले आदमी की तरफ़ देखा और पूछा : "कौन हो तुम?"

दुबला-पतला आदमी मुसकराया : "इस घर का मालिक... देखो-देखो, तुम्हारे हाथ से काँच का मर्तबान गिर रहा है...!"

1. एक-दूसरे की सहायता करना; 2. अचानक; 3. अधिकार; 4. लूटा हुआ माल; 5. नेतृत्व; 6. छाँटना, चुनना; 7. खुला; 8. ईर्ष्यालु; 9. उद्विग्न, जुनूनी; 10. व्यवस्था; 11. कभी-कभी; 12. भर्त्सना; 13. बाँट लो; 14. अचानक; 15. पलक झपकते

4. तक़सीम[1]

एक आदमी ने अपने लिए लकड़ी का एक बड़ा संदूक़ मुंतख़ब[2] किया; जब उसे उठाने लगा तो संदूक अपनी जगह से एक इंच भी न हिला।

एक शख़्स ने जिसे शायद अपने मतलब की कोई चीज़ मिल ही नहीं रही थी, संदूक़ उठाने की कोशिश करनेवाले से कहा : "मैं तुम्हारी मदद करूँ?"

संदूक़ उठाने की कोशिश करनेवाला इम्दाद[3] लेने पर राज़ी हो गया।

उस शख़्स ने जिसे अपने मतलब की कोई चीज़ मिल नहीं रही थी, अपने मज़बूत हाथों से संदूक़ को जुंबिश[4] दी और संदूक़ उठाकर अपनी पीठ पर धर लिया– दूसरे ने सहारा दिया, और दोनों बाहर निकले।

संदूक़ बहुत बोझिल था। उसके वज़न के नीचे उठानेवाले की पीठ चटख़ रही थी और टाँगें दोहरी होती जा रही थीं, मगर इनाम की तवक़्क़ो[5] ने उस जिस्मानी मशक़्क़त[6] का एहसास नीम मुर्दा[7] कर दिया था।

संदूक़ उठानेवाले के मुक़ाबले में संदूक़ को मुंतख़ब करनेवाला बहुत कमज़ोर था– सारा रास्ता वह सिर्फ़ एक हाथ से संदूक़ को सहारा देकर अपना हक़ क़ायम रखता रहा।

जब दोनों महफ़ूज़[8] मुक़ाम पर पहुँच गए तो संदूक़ को एक तरफ़ रखकर सारी मशक़्क़त बर्दाश्त करनेवाले ने कहा : "बोलो, इस संदूक़ के माल में से मुझे कितना मिलेगा?"

संदूक़ पर पहली नज़र डालनेवाले ने जवाब दिया : "एक चौथाई।"

"यह तो बहुत कम है।"

"कम बिलकुल नहीं, ज़्यादा है... इसलिए कि सबसे पहले मैंने ही इस

माल पर हाथ डाला था।''

''ठीक है, लेकिन यहाँ तक इस कमरतोड़ बोझ को उठा के लाया कौन है?''

''अच्छा, आधे-आधे पर राज़ी होते हो?''

''ठीक है... खोलो संदूक़।''

संदूक़ खोला गया तो उसमें से एक आदमी बाहर निकला। उसके हाथ मे तलवार थी– उसने दोनों हिस्सेदारों को चार हिस्सों में तक़सीम कर दिया।

1. विभाजन; 2. चुनना; 3. मदद; 4. हिलाया; 5. आशा; 6. शारीरिक परिश्रम; 7. अधमरा; 8. सुरक्षित।

5. जायज़ इस्तेमाल[1]

दस राउंड चलाने और तीन आदमियों को ज़ख़्मी करने के बाद पठान भी आख़िर सुर्ख़रू[2] हो ही गया।

एक अफ़रा-तफ़री मची हुई थी; लोग एक-दूसरे पर गिर रहे थे; छीना झपटी हो रही थी; मारधाड़ भी जारी थी– पठान अपनी बंदूक़ लिए हुजूम में घुसा और तक़रीबन एक घंटा कुश्ती लड़ने के बाद थरमस पर हाथ साफ़ करने में कामयाब हो गया।

पुलिस पहुँची तो सब भागे; पठान भी।

एक गोली उसके दाहिने कान को चाटती हुई निकल गई। पठान ने इसकी बिलकुल परवाह न की और सुर्ख़ रंग थरमस को अपने हाथ में मज़बूती से थामे रखा।

अपने दोस्तों के पास पहुँचकर उसने सबको बड़े फ़ख़्रिया[3] अंदाज़ में थरमस दिखाई।

एक ने मुसकराकर कहा : ''ख़ाँ साहब, आप यह क्या उठा लाए हैं?''

पठान ने पसंदीदा नज़रों से चमकती हुई थरमस को देखा और पूछा : क्यों?''

''यह तो ठंडी चीज़ें ठंडी और गर्म चीज़ें गर्म रखनेवाली बोतल है।''

पठान ने थरमस पर नज़रें गाड़ते हुए कहा : ''ख़ू अम इसमें निसवार डालेगा... गर्मियों में गर्म रहेगा, सर्दियों में सर्द...''

1. उचित प्रयोग; 2. कामयाब; 3. गर्वीले।

6. बेख़बरी का फ़ायदा

लबलबी दबी पिस्तौल से झुँझलाकर गोली बाहर निकली।

खिड़की में से बाहर झाँकनेवाला आदमी उसी जगह दोहरा हो गया।

लबलबी थोड़ी देर के बाद फिर दबी— दूसरी गोली भिनभिनाती हुई बाहर निकली।

सड़क पर माशकी की मश्क फटी; वह औंधे मुँह गिरा और उसका लहू मश्क के पानी में हल[1] होकर बहने लगा;

लबलबी तीसरी बार दबी—निशाना चूक गया; गोली एक गीली दीवार में जज़्ब[2] हो गई।

चौथी गोली एक बूढ़ी औरत की पीठ में लगी; वह चीख़ भी न सकी और वहीं ढेर हो गई।

पाँचवीं और छठी गोली बेकार गई; कोई हलाक हुआ न ज़ख़्मी।

गोलियाँ चलानेवाला भिन्ना गया।

दफ़अतन सड़क पर एक छोटा-सा बच्चा दौड़ता हुआ दिखाई दिया।

गोलियाँ चलानेवाले ने पिस्तौल का मुँह उसकी तरफ़ मोड़ा।

उसके साथी ने कहा : "यह क्या करते हो?"

गोलियाँ चलानेवाले ने पूछा : "क्यों?"

"गोलियाँ तो ख़त्म हो चुकी हैं!"

"तुम ख़ामोश रहो... इतने-से बच्चे को क्या मालूम?"

1. मिलकर चलकर; 2. आत्मसात, समोना।

7. मुनासिब कार्रवाई

जब हमला हुआ तो महल्ले में अक़ल्लीयत[1] के कुछ लोग क़त्ल हो गए

जो बाक़ी बचे, जानें बचाकर भाग निकले— एक आदमी और उसकी बीवी अलबत्ता अपने घर के तहख़ाने में छुप गए।

दो दिन और दो रातें पनाह-याफ़्ता[2] मियाँ-बीवी ने हमलावरों की मुतवक़्क़े-आमद[3] में गुज़ार दीं, मगर कोई न आया।

दो दिन और गुज़र गए। मौत का डर कम होने लगा। भूख

और प्यास ने ज़्यादा सताना शुरू किया।

चार दिन और बीत गए। मियाँ-बीवी को ज़िंदगी और मौत से कोई दिलचस्पी न रही। दोनों जाए पनाह[4] से बाहर निकल आए।

ख़ाविंद ने बड़ी नहीफ़[5] आवाज़ में लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह[6] किया और कहा : ''हम दोनों अपना आप तुम्हारे हवाले करते हैं... हमें मार डालो।''

जिनको मुतवज्जेह किया गया था, वह सोच में पड़ गए : ''हमारे धरम में तो जीव-हत्या पाप है...''

उन्होंने आपस में मशवरा किया और मियाँ-बीवी को मुनासिब कार्रवाई के लिए दूसरे मुहल्ले के आदमियों के सिपुर्द कर दिया।

1. अल्पसंख्यक; 2. शरण लिए हुए, छुपे हुए; 3. आने की आशा; 4. बचाव के स्थान; 5. हलकी धीमी; 6. ध्यान खींचा।

8. करामात

लूटा हुआ माल बरामद करने के लिए पुलिस ने छापे मारने शुरू किए।

लोग डर के मारे लूटा हुआ माल रात के अँधेरे में बाहर फेंकने लगे; कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपना माल भी मौक़ा पाकर अपने से अलहदा कर दिया, ताकि क़ानूनी गिरफ़्त से बचे रहें।

एक आदमी को बहुत दिक़्क़त पेश आई। उसके पास शक्कर की दो बोरियाँ थीं जो उसने पंसारी की दूकान से लूटी थीं। एक तो वह जूँ-तूँ रात के अंधेरे में पासवाले कुएँ में फेंक आया, लेकिन जब दूसरी उसमें डालने लगा तो ख़ुद भी साथ चला गया।

शोर सुनकर लोग इकट्ठे हो गए। कुएँ में रस्सियाँ डाली गईं।

जवान नीचे उतरे और उस आदमी को बाहर निकाल लिया गया।

लेकिन वह चंद घंटों के बाद मर गया।

दूसरे दिन जब लोगों ने इस्तेमाल के लिए उस कुँए में से पानी निकाला तो वह मीठा था।

उसी रात उस आदमी की क़ब्र पर दीए जल रहे थे।

9. इस्लाह[1]

''कौन हो तुम?''

''तुम कौन हो?''

''हर-हर महादेव... हर-हर महादेव!''

''हर-हर महादेव!''

''सुबूत क्या है?''

''सुबूत...? मेरा नाम धरमचंद है।''

''यह कोई सुबूत नहीं।''

''चार वेदों में से कोई भी बात मुझ से पूछ लो। ''

''हम वेदों को नहीं जानते... सुबूत दो।''

''क्या?''

''पायजामा ढीला करो।''

पायजामा ढीला हुआ तो एक शोर मच गया : ''मार डालो... मार डालो...''

''ठहरो... ठहरो... मैं तुम्हारा भाई हूँ... भगवान की क़सम, तुम्हारा भाई हूँ।''

''तो यह क्या सिलसिला है?''

''जिस इलाक़े से मैं आ रहा हूँ, वह हमारे दुश्मनों का है... इसीलिए मजबूरन मुझे ऐसा करना पड़ा, सिर्फ़ अपनी जान बचाने के लिए... एक यही चीज़ ग़लत हो गई है, बाकी मैं बिलकुल ठीक हूँ...''

''उड़ा दो ग़लती को...''

ग़लती उड़ा दी गई... धरमचंद भी साथ ही उड़ गया।

1. संशोधन

10. जैली

सुबह छः बजे पैट्रोल पंप के पास हाथ गाड़ी में
बर्फ़ बेचनेवाले के छुरा घोंपा गया।
सात बजे तक उसकी लाश लुक बिछी सड़क पर
पड़ी रही, और उस पर बर्फ़ पानी बन-बन गिरती रही।
सवा सात बजे पुलिस लाश उठाकर ले गई; बर्फ़ और

ख़ून वहीं सड़क पर पड़े रहे।
फिर एक टाँगा पास से गुज़रा।
बच्चे ने सड़क पर जीते-जीते ख़ून के जमे हुए चमकीले लोथड़े की तरफ़ देखा– उसके मुँह में पानी भर आया। अपनी माँ का बाज़ू खींचकर बच्चे ने उँगली से उस तरफ़ इशारा किया : ''देखो मम्मी, जैली...!''

11. दावते-अमल

आग लगी तो सारा महल्ला जल गया
सिर्फ़ एक दूकान बच गई,
जिसकी पेशानी पर यह बोर्ड आवेजाँ[1] था :
''यहाँ इमारत साज़ी का जुमला[2] सामान मिलता है।''

1. लटका हुआ; 2. सभी, समग्र।

12. पठानिस्तान

''ख़ू एकदम जल्दी बोलो, तुम कौन ऐ?''
''मैं... मैं...''
''ख़ू शैतान का बच्चा, जल्दी बोलो, ...इंदू ऐ या मुस्लिमीन?''
''मुस्लिमीन।''
''ख़ू तुम्हारा रसूल कौन ऐ?''
''मुहम्मद ख़ान।''
''टीक ऐ... जाओ।''

13. ख़बरदार

बलवाई
मालिक मकान को
बड़ी मुश्किलों से घसीटकर बाहर लाए।
कपड़े झाड़कर वह उठ खड़ा हुआ

और बलवाइयों से कहने लगा :
''तुम मुझे मार डालो, लेकिन ख़बरदार,
जो मेरे रुपए-पैसे को हाथ लगाया...!''

14. हमेशा की छुट्टी

''पकड़ लो... पकड़ लो... देखो जाने न पाए।''
शिकार थोड़ी-सी दौड़-धूप के बाद पकड़ लिया गया।
जब नेज़े[1] उसके आर-पार होने के लिए आगे बढ़े
तो उसने लरज़ां[2] आवाज़ में गिड़गिड़ाकर कहा :
''मुझे न मारो... मैं छुट्टियों में अपने घर जा रहा हूँ।''

1. भाला (एक हथियार); 2. कंपित।

15. हलाल और झटका

''मैंने उसकी शहरग[1] पर छुरी रखी, हौले-हौले फेरी और उसको हलाल कर दिया।''

''यह तुमने क्या किया?''

''क्यों?''

''इसको हलाल क्यों किया?''

''मज़ा आता है इस तरह।''

''मज़ा आता है के बच्चे... तुझे झटका करना चाहिए था... इस तरह।''

और हलाल करनेवाले की गर्दन का झटका हो गया।

1. शरीर की सबसे बड़ी शिरा जो हृदय में मिलती है।

16. घाटे का सौदा

दो दोस्तों ने मिलकर दस-बीस लड़कियों में से एक लड़की चुनी और बयालीस रुपए देकर उसे ख़रीद लिया।

रात गुज़ारकर एक दोस्त ने उस लड़की से पूछा : ''तुम्हारा नाम क्या

है?''

लड़की ने अपना नाम बताया तो वह भिन्ना गया : ''हमसे तो कहा गया था कि तुम दूसरे मज़हब की हो...!''

लड़की ने जवाब दिया : ''उसने झूठ बोला था!''

यह सुनकर वह दौड़ा-दौड़ा अपने दोस्त के पास गया और कहने लगा : ''उस हरामज़ादे ने हमारे साथ धोखा किया है... हमारे ही मज़हब की लड़की थमा दी... चलो, वापस कर आएँ...!''

17. हैवानियत

बड़ी मुश्किल से मियाँ-बीवी घर का थोड़ा-सा असासा[1] बचाने में कामयाब हो

गए।

एक जवान लड़की थी, उसका पता न चला।

एक छोटी-सी बच्ची थी, उसको माँ ने अपने सीने के साथ चिमटाए रखा।

एक भूरी भैंस थी, उसको बलवाई हाँककर ले गए।

एक गाय थी, वह बच गई मगर उसका बछड़ा न मिला।

मियाँ-बीवी, उनकी छोटी लड़की और गाय एक जगह छुपे हुए थे।

सख़्त अँधेरी रात थी।

बच्ची ने डरकर रोना शुरू किया तो ख़ामोश फ़ज़ा में जैसे कोई ढोल पीटने लगा।

माँ ने ख़ौफ़ज़दा होकर बच्ची के मुँह पर हाथ रख दिया

कि दुश्मन सुन न ले। आवाज़ दब गई– बाप ने

एहतियातन बच्ची के ऊपर गाढ़े की मोटी चादर डाल दी।

थोड़ी दूर जाने के बाद दूर से किसी बछड़े की आवाज़ आई।

गाय के कान खड़े हो गए– वह उठी और दीवानावार[2] दौड़ती हुई डकराने लगी

उसको चुप कराने की बहुत कोशिश की गई, मगर बेसूद[3]

शोर सुनकर दुश्मन क़रीब आने लगा।
मशालों की रोशनी दिखाई देने लगी।

बीवी ने अपने मियाँ से बड़े ग़ुस्से के साथ कहा :
''तुम क्यों इस हैवान को अपने साथ ले आए थे?''

1. सामान; 2. पागलों की तरह; 3. बेकार।

18. कस्त्रे-नफ़्सी[1]

चलती गाड़ी रोक ली गई।
जो दूसरे मज़हब के थे,
उनको निकाल-निकालकर तलवारों और गोलियों से हलाक कर दिया गया।
इससे फ़ारिग़ होकर
गाड़ी के बाक़ी मुसाफ़िरों की
हलवे, दूध और फलों से तवाज़ो[2] की गई।
गाड़ी चलने से पहले
तवाज़ो करनेवालों के मुंतज़िम[3] ने
मुसाफ़िरों को मुख़ातिब करके कहा :
''भाइयो और बहनो,
हमें गाड़ी की आमद की इत्तिला बहुत देर में मिली;
यही वजह है कि हम जिस तरह चाहते थे,
उस तरह आपकी ख़िद्मत न कर सके...!''

1. विनम्रता; 2. आवभगत; 3. प्रबंधक।

19. खाद

उसकी ख़ुदकुशी पर
उसके एक दोस्त ने कहा :
''बहुत ही बेवक़ूफ़ था जी...

मैंने लाख समझाया कि देखो अगर तुम्हारे केस काट दिए गए हैं
और तुम्हारी दाढ़ी मूँड़ दी गई है
तो इसका यह मतलब नहीं
कि तुम्हारा धर्म ख़त्म हो गया...
रोज़ दही इस्तेमाल करो...
वाह गुरु जी ने चाहा
तो एक ही बरस में तुम वैसे के वैसे हो जाओगे...!''

20. इस्तिक़्लाल[1]

''मैं
सिख
बनने के लिए
हरगिज़
तैयार नहीं...
मेरा उस्तरा
वापिस कर दो
मुझे...!''

1. दृढ़ता।

21. निगरानी में

क अपने दोस्त ख को अपना हममज़हब ज़ाहिर करके
उसे महफ़ूज़[1] मुक़ाम पर पहुँचाने के लिए
मिलिट्री के एक दस्ते के साथ रवाना हुआ।
रास्ते में ख ने, जिसका मज़हब मस्लहतन[2] बदल दिया गया था,
मिलिट्रीवालों से पूछा : ''क्यों जनाब, आसपास कोई वारदात तो नहीं हुई?''

जवाब मिला : ''कोई ख़ास नहीं... फ़लाँ महल्ले में अलबत्ता एक कुत्ता मारा गया।''

सहमकर ख ने पूछा : ''कोई और ख़बर?''

जवाब मिला : ‘‘ख़ास नहीं... नहर में तीन कुतियों की लाशें मिलीं।’’

क ने ख की ख़ातिर मिलिट्रीवालों से कहा : ‘‘मिलिट्री कुछ इंतज़ाम नहीं करती?’’

जवाब मिला : ‘‘क्यों नहीं... सब काम उसी की निगरानी में होता है...!

1. सुरक्षित; 2. कारणवश।

22. जूता

हुजूम ने रुख़ बदला
और सर गंगाराम के बुत पर पिल पड़ा।
लाठियाँ बरसाई गईं,
ईंटें और पत्थर फेंके गए;
एक ने मुँह पर तारकोल मल दिया; दूसरे ने बहुत से पुराने जूते जमा किए;
और उनका हार बनाकर बुत के गले में डालने के लिए आगे बढ़ा
कि पुलिस आ गई और गोलियाँ चलना शुरू हो गईं–
जूतों का हार पहनानेवाला ज़ख़्मी हो गया;
चुनांचे मरहम–पट्टी के लिए उसे
सर गंगाराम हस्पताल भेज दिया गया।

23. पेशबंदी[1]

पहली वारदात नाके के होटल के पास हुई।
फ़ौरन ही वहाँ एक सिपाही का पहरा लगा दिया गया।

दूसरी वारदात दूसरे ही रोज़ शाम को स्टोर के सामने हुई।
सिपाही को पहली जगह से हटाकर दूसरी वारदात के मक़ाम पर मुतऐयिन[2] कर दिया गया।

तीसरा केस रात के बारह बजे लांडरी के पास हुआ।
जब इंस्पेक्टर ने सिपाही को इस नई जगह पहरा देने का हुक्म दिया

तो उसने कुछ देर ग़ौर करने के बाद कहा : ''मुझे वहाँ खड़ा कीजिए जहाँ नई वारदात होने वाली है... !''

1. किसी काम के होने से पूर्व उसका प्रबंध; 2. नियुक्त, तैनात।

24. सॉरी

छुरी
पेट चाक करती हुई
नाफ के नीचे तक चली गई।
इज़ारबंद कट गया।
छुरी मारनेवाले के
मुँह से
दफ़्अतन[1]
कलमा-ए-तअस्सुफ़[2] निकला
''च च च... मिशटेक हो गया!''

1. अचानक; 2. बुरे मार्ग जाने से बचने के लिए पढ़ी जाने वाली आयत।

25. रिआयत

''मेरी आँखों के सामने
मेरी जवान बेटी को
न मारो...''
''चलो, इसी की मान लो...
कपड़े उतारकर
हाँक दो एक तरफ़...''

26. सफ़ाई पसंदी

गाड़ी रुकी हुई थी।
तीन बंदूक़ची एक डिब्बे के पास आए।

खिड़कियों में से अंदर झाँककर उन्होंने मुसाफ़िरों से पूछा :

''क्यों जनाब, कोई मुर्ग़ा है?''

एक मुसाफ़िर कुछ कहते-कहते रुक गया।

बाक़ियों ने जवाब दिया : ''जी नहीं।''

थोड़ी देर के बाद चार नेज़ाबर्दार[1] आए।

खिड़कियों में से अंदर झाँककर उन्होंने मुसाफ़िरों से पूछा :

''क्यों जनाब, कोई मुर्ग़ा-वुर्ग़ा है?''

उस मुसाफ़िर ने जो पहले कुछ कहते-कहते रुक गया था, जवाब दिया:

''जी मालूम नहीं... आप अंदर आ के संडास में देख लीजिए।''

नेज़ाबर्दार अंदर दाख़िल हुए।

संडास तोड़ा गया तो उसमें से एक मुर्ग़ा निकल आया।

एक नेज़ाबर्दार ने कहा : ''कर दो हलाल।''

दूसरे ने कहा : ''नहीं, यहाँ नहीं... डिब्बा ख़राब हो जाएगा... बाहर ले चलो।''

1. भाले लिए हुए व्यक्ति।

27. सदक़े उसके

मुजरा ख़त्म हुआ।

तमाशाई रुख़्सत हो गए।

उस्ताद जी ने कहा :

''सबकुछ लुटा-पिटाकर
यहाँ आए थे,
लेकिन अल्लाह मियाँ ने
चंद दिनों ही में
वारे-न्यारे कर दिए...!''

28. इश्तिराकीयत[1]

वह अपने घर का तमाम ज़रूरी सामान

एक ट्रक में लदवाकर
दूसरे शहर
जा रहा था
कि रास्ते में
लोगों ने उसे रोक लिया।

एक ने ट्रक के माल–असबाब पर हरीसाना[2] नज़र डालते हुए कहा :

''देखो यार, किस मज़े में इतना माल अकेला उड़ाए चला जा रहा है।''

असबाब के मालिक ने मुसकराकर कहा : ''जनाब, यह माल मेरा अपना है।''

दो–तीन आदमी हँसे : ''हम सब जानते हैं।''

एक आदमी चिल्लाया : ''लूट लो... यह अमीर आदमी है... ट्रक लेकर चोरियाँ करता है...!''

1. साम्यवाद; 2. लालची।

29. उलाहना

''देखो यार,
तुमने ब्लैक मार्केट
के दाम भी लिए
और ऐसा रद्दी
पेट्रोल दिया
कि
एक दूकान
भी न जली...!''

30. आराम की ज़रूरत

''मरा नहीं... देखो, अभी जान बाक़ी है!''

''रहने दे यार... मैं थक गया हूँ!''

31. क़िस्मत

‘‘कुछ नहीं दोस्त...
इतनी मेहनत
करने पर सिर्फ़
एक बक्स हाथ
लगा था, पर उस
में भी साला सुअर
का गोश्त निकला...!’’

32. आँखों पर चर्बी

‘‘हमारी क़ौम के लोग भी कैसे हैं...
पचास सुअर इतनी मुश्किलों के बाद
तलाश करके इस मस्जिद में काटे हैं...
वहां मंदिरों में धड़ाधड़
गाय का गोश्त बिक रहा है...
लेकिन यहाँ सूअर का माँस ख़रीदने
के लिए कोई आता ही नहीं...!’’

देख कबीरा रोया

1.

नगर नगर ढिंडोरा पीटा गया कि जो आदमी भीख माँगेगा उसको गिरफ्तार कराया जाए। लोग खुशियाँ मनाने लगे कि एक बहुत पुरानी लानत दूर हो गयी।

कबीर ने देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गये। लोगों ने पूछा– ''ऐ जुलाहे, तू क्यों रोता है?''

कबीर ने रोकर कहा– ''कपड़ा दो चीजों से बनता है–ताने और पीटे से। गिरफ्तारियों का ताना तो शुरू हो गया, पर पेट भरने का पीटा कहाँ है?''

2.

एक एम.ए., एल.एल.बी. को दो सौ खडियाँ अलॉट हो गईं। कबीर ने देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। एम.ए., एल.एल.बी. ने पूछा–''ऐ जुलाहे के बच्चे तू रोता क्यों है? ...क्या इसलिए कि मैंने तेरा हक़ ग़सब[1] कर लिया है?''

कबीर ने रोते हुए जवाब दिया– ''तुम्हारा कानून तुम्हें यह नुक्ता समझाता है कि खडियाँ पड़ी रहने दो, धागे का जो कोटा मिले, उसे बेच दो। मुफ़्त की खट-खट से क्या फायदा... लेकिन ये खट-खट ही जुलाहे की जान है।''

3.

छपी हुई किताब के फर्मे थे, जिनके छोटे-छोटे लिफ़ाफ़े बनाये जा रहे थे। कबीर का उधर से गुज़रना हुआ। उसने दो तीन लिफ़ाफ़े उठाए और उन पर छपी हुई तहरीर[2] पढ़कर उसकी आँखें में आँसू आ गये। लिफ़ाफ़े बनाने वाले ने हैरत से पूछा– ''मियाँ कबीर तुम क्यों रोने लगे?''

कबीर ने जवाब दिया– ''इन कागज़ों पर भगत सूरदास की कविता छपी है। लिफ़ाफ़े बनाकर उसकी बे-इज़्ज़ती न करो।''

लिफ़ाफ़े बनाने वाले ने हैरत से कहा– ''जिसका नाम सूरदास है, वो भगत कभी नहीं हो सगता।''

कबीर ने ज़ार-ओ-क़तार रोना शुरू कर दिया।

4.

एक ऊँची इमारत पर लक्ष्मी का खूबसूरत बुत नस्ब[3] था। चन्द लोगों ने जब उसे अपना दफ़्तर बनाया तो उस बुत को टाट के टुकड़ों से ढाँप दिया। कबीर ने ये देखा तो उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। दफ़्तर के आदमियों ने उसे ढाढ़स दी और कहा–''हमारे मज़हब में ये बुत जायज़ नहीं।''[4]

कबीर ने टाट के टुकड़ों की तरफ़ अपनी नमनाक आँखों से देखते हुए कहा– ''खूबसूरत चीज का बद-सूरत बना देना भी किसी मज़हब में जायज़ नहीं।''

दफ़्तर के आदमी हँसने लगे। कबीर ढारें मार-मारकर रोने लगा।

5.

सफ़ आरा[5] फ़ौजों के सामने जरनैल ने तक़रीर करते हुए कहा– ''अनाज कम है, कोई परवाह नहीं। फ़सलें तबाह हो गयी हैं , कोई फ़िक्र नहीं... हमारे सिपाही दुश्मन से भूखे ही लड़ेंगे।''

दो लाख फ़ौजियों ने जिन्दाबाद के नारे लगाने शुरू कर दिये।

कबीर चिल्ला-चिल्ला के रोने लगा। जरनैल को बहुत गुस्सा आया। चुनांचे वो पुकार उठा– ''ऐ शख़्स, बता सकता है, तू क्यों रोता है।''

कबीर ने रोनी आवाज में कहा– ''ऐ मेरे बहादुर जरनैल... भूख से कौन लड़ेगा?''

दो लाख आदमियों ने कबीर मुर्दाबाद के नारे लगाने शुरू कर दिये।

6.

''भाइयो, दाढ़ी रक्खो, मूँछें कतरवाओ और शरई पजामा पहनो... बहनो, एक चोटी करो, सुर्खी-सफेदा न लगाओ, बुर्क़ा पहनो।...'' बाज़ार में एक आदमी चिल्ला रहा था। कबीर ने ये देखा तो उसकी आँखें नमनाक हो गयीं।

चिल्लाने वाले आदमी ने और ज्यादा चिल्ला कर पूछा– ''कबीर तू क्यों रोने लगा?''

कबीर ने अपने आँसू ज़ब्त करते हुए कहा– ''तेरा भाई है न तेरी बहन, और ये जो तेरी दाढ़ी है, इसमें तूने वसीमा[7] क्यों लगा रखा है...क्या सफेद अच्छी नहीं थी?''

चिल्लाने वाले ने गालियाँ देनी शुरू कर दीं। कबीर की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

7.

एक जगह बहस हो रही थी।

''अदब बराए अदब[8] है।''

''महज़ बकवास है, अदब बराए जिन्दगी है।''

''वो जमाना लद गया... अदब, प्रोपेगण्डे का दूसरा नाम है।''

''तुम्हारी ऐसी की तैसी...''

''तुम्हारे इस्टालिन की ऐसी की तैसी...''

''तुम्हारे रजअत पसन्द[9] और बीमारियों के मारे हुए फ्लाबेअर और वाल्देयर की ऐसी की तैसी।''

कबीर रोने लगा। बहस करने वाले बहस छोड़कर उसकी तरफ मुतवज्जा[10] हुए। एक ने उससे पूछा– ''तुम्हारे तहत-अल-शुऊर[11] में जरूर कोई ऐसी चीज थी जिसे ठेस पहुँची।''

दूसरे ने कहा– ''ये आँसू बुर्जुआई सदमे का नतीजा हैं।''

कबीर और ज्यादा रोने लगा। बहस करने वालों ने तंग आकर बयक-ज़बान[12] सवाल किया– ''मियां, ये बताओ कि तुम रोते क्यों हो?''

कबीर ने कहा– ''मैं इसलिए रोया था कि आपकी समझ में आ जाये, अदब बराए अदब है या अदब बराए जिन्दगी।''

बहस करने वाले हँसने लगे। एक ने कहा– ''ये प्रोलतारी मस्ख़रा है।''

दूसरे ने कहा– ''नहीं, ये बुर्जुआई बहुरुपिया है।''

कबीर ने आँखों में फिर आँसू आ गये।

8.

हुक्म नाफ़िज़ हो गया कि शहर की तमाम कसबी[14] औरतें एक महीने के अन्दर शादी कर लें और शरीफाना जिन्दगी बसर करें। कबीर एक चकले से गुजरा तो कसबियों के उड़े हुए चेहरे देखकर उसने रोना शुरू कर दिया। एक मौलवी ने उससे पूछा– ''मौलाना, आप क्यों रो रहे हैं?''

कबीर ने रोते हुए जवाब दिया– ''अख़लाक[15] के मुअल्लिम[16] इन कसबियों के शौहरों के लिए क्या बन्दोबस्त करेंगे?''

मौलवी कबीर की बात न समझा और हँसने लगा। कबीर की आँखें और ज्यादा अश्कबार हो गईं।

9.

दस–बारह हजार के मजमा में एक आदमी तक़रीर कर रहा था– ''भाइयो! बाज़–याफ़्ता[18] औरतों का मसला हमारा सबसे बड़ा मसला है। इस का हल हमें सबसे पहले सोचना है। अगर हम ग़ाफिल[19] रहे तो ये औरतें क़हबाख़ानों में चली जायेंगी। फ़ाहिशा[20] बन जायेंगी... सुन रहे हो, फ़ाहिशा बन जायेंगी... तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम उन को इस खौफ़नाक मुस्तक़बिल[21] से बचाओ और अपने घरों में उनके लिए जगह पैदा करो... अपने भाई, या अपने बेटे की शादी करने से पहले तुम्हें इन औरतों को हरगिज़ हरगिज़ फ़रामाश[22] नहीं करना चाहिए।''

कबीर फूट–फूटकर रोने लगा। तक़रीर करने वाला रुक गया। कबीर की तरफ इशारा करके उसने आवाज में हाज़िरीन से कहा–''देखो, उस शख़्स के दिल पर कितना असर हुआ है!''

कबीर ने गुलूगीर[24]आवाज में कहा– ''लफ़्ज़ों के बादशाह, तुम्हारी तक़दीर ने मेरे दिल पर कुछ असर नहीं किया। मैंने जब सोचा कि तुम किसी मालदार औरत से शादी करने की ख़ातिर अभी तक कुँवारे बैठे हो, तो मेरी आँखों में आँसू आ गये।''

10.

एक दुकान पर ये बोर्ड लगा था– ''जिन्नाह बूट हाऊस।'' कबीर ने उसे देखा तो ज़ार–ओ–क़तार रोने लगा।

लोगों ने देखा कि एक आदमी खड़ा है। बोर्ड पर आँखें जमी हैं और रोये जा रहा है। उन्होंने तालियाँ बजानी शुरू कर दीं– ''पागल है... पागल है।''

11.

मुल्क का सबसे बड़ा क़ाइद[25] चल बसा तो चारों तरफ मातम की सफ़ें बिछ गयीं। अक्सर लोग बाजुओं पर स्याह बिल्ले बाँधकर फिरने लगे।

कबीर ने ये देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। स्याह बिल्ले वालों ने इससे पूछा– ''क्या दुख पहुँचा जो तुम रोने लगे?''

कबीर ने जवाब दिया– ''ये काले रंग की चिन्दियाँ अगर जमा कर ली जाएँ तो सैकड़ों की सतरपोशी कर सकती हैं।''

स्याह बिल्ले वालों ने कबीर को पीटना शुरू कर दिया– ''तुम कम्युनिस्ट

हो, फिफ्थ कालमिस्ट हो, पाकिस्तान के गद्दार हो।''

कबीर हँस पड़े–''लेकिन दोस्तो, मेरे बाजू पर तो किसी रंग का बिल्ला नहीं।''

1. कब्ज़ा, 2. पंक्तियाँ, 3. स्थापित, 4. उचित, 5. युद्ध के लिए आया दल, 6. भाषण, 7. नील की पत्ती, 8. कला कला के लिए, 9. प्रतिक्रियावादी, 10. ध्यान दिया, 11. विवेक, 12. एक स्वर में, 13. लागू, 14. वेश्या, 15. नैतिकता, 16. शिक्षक, 17. भाषण, 18. फिर प्राप्त हुई, 19. असावधान, 20. अश्लील, 21. भविष्य, 22. भूलना, 23. उपस्थित लोगों, 24. रुँधी हुई, 25. नेता

ज़्स आदमी के नाम
जिसने अपनी ख़ूँरेज़ियों[1] का ज़िक्र करते हुए कहा :
''जब मैंने एक बुढ़िया को मारा
तो मुझे ऐसा लगा,
मुझसे क़त्ल हो गया है...!''

1. खून बहाना (निर्दयता)

अपनी-अपनी डफली

1.

''अस्लामालेकुम।''

''वालेकुमसलाम।''

''कहिये मौलाना क्या हाल है?''

''अल्लाह का फज़लो-करम है।... हर हाल में गुजर रही है।''

''हज से कब वापिस तशरीफ लाये?''

''जी आपकी दुआ से एक हफ़्ता हो गया।''

''अल्लाह अल्लाह है। आपने हिम्मत की तो खाना काबा की ज़ियारत[1] कर ली। हमारी तो दिल ही दिल में रह जायेगी... दुआ कीजिये कि ये नेमत[2] हमें भी नसीब हो।''

''इंशाअल्लाह... वरना मैं गुनगहार किस काबिल हूँ।''

''मेरे लायक़ कोई ख़िदमत?''

''किसी तकल्लुफ की जरूरत नहीं। लेकिन देखिये... ज़रा कान लाइये इधर... मेरे यहाँ दो बोरियाँ खाण्ड की हैं... आपकी अक्सर जान-पहचान है। किसी को जरूरत हो तो मुझ से फ़रमा दीजियेगा... आप समझ गये न... दाम वाजबी[3] होंगे।''

2.

''लीजिये जनाब! हमारी ख़िदमत का सिला मिल गया।''

''क्या?... मुबारक हो!''

''सौ-सौ मुबारक.. कम्पनी ने नौकरी से जवाब दे दिया।''

''हाएँ... ये कब की बात है?''

''एक महीना हो गया है।''

''लाहौल विला, मुझे मालूम ही नहीं था।''

''दो सौ मुलज़िमों की छाँटी हुई है।''

''बहुत अफ़सोस की बात है... कोई एहतजाज[4] वगैरह हुआ?''

सैकड़ों... हड़तालें हुईं, जलूस निकले, कई मर्तबा दस-दस बीस-बीस रोज की भूख-हड़ताल भी की... वादे हुए वइद[5] हुए... नतीजा वही ढाक के तीन पात।

''तआज्जुब है... किसी के कान पर जूँ तक न रेंगी।''

''इन तिलों में तेल है न इतनी सर में जूएँ... कानों पर रेंगेंगी कैसे... लेकिन जूएँ ये तो हमारी दुनिया की चीजें हैं। सर और कपड़ों से टपकी पड़ती हैं।''

''अल्लाह रहम करे।''

''अल्लाह अब रहम नहीं करेगा... वो दिन लद गए जब वो माईल-ब-करम[6] हुआ करता था... इतने आदमी हैं वो किस-किस की हाजत रवा[7] करे। मेरा तो ख़याल है ऊपर भी राशनिंग सिस्टम शुरू हो गया है।''

3.

''मैं उस बदज़ात से क्या कहूँ... साफ मुझसे दग़ा कर गया।''

''कैसे?''

''हरामज़ादे ने वादा मुझसे किया और दोनों नयी 'बोकस[8]', कहीं ठिकाने लगा दीं।''

''इसकी वजह?''

''मैंने उसका एक काम किया था उसके एवज़ में[9] मैंने उससे कहा था कि मुझे एक नयी 'बोकस' जो तुम्हारे यहाँ आने वाली है, दिलवा दो। मैं आधी कीमत अदा कर दूँगा। आधी उस काम के मुजरे[10] में गयी है।''

''और वो काम लाखों का था।''

''इसलिए तो मैं कहता हूँ ब्लडी स्वाइन ने मेरे साथ धोखा किया।''

''लेकिन मैं भी उससे बदला लूँगा... दो 'बोकस' लेकर कोठी पर सीधी नाक आयेगा''

4.

''ये आप टीन के डिब्बे और सिगरेट की खाली डिब्बियाँ क्यों यहाँ से ले जाया करते हैं?''

''हजूर ऐसे ही।''

“ 'कोई वजह तो होगी?'

“आपके यहाँ बेकार पड़े रहते हैं, मैं ले जाता हूँ।”

“कुछ मिल जाता है इनसे?”

“जी हाँ, बहुत कुछ।”

“देखो, हमें मालूम ही नहीं।”

“जी हाँ, आपको मालूम नहीं... मेरी बच्चियाँ उनसे खेलती हैं। मेरी इतनी इस्तताअत[11] नहीं कि मैं उनके लिए घर खिलौने ले जाया करूँ। इसलिए मैंने इनको इस तौर पर समझाया कि वो निकम्मी चीजों ही को दुनिया के बेहतरीन खिलौने समझती हैं।”

“बड़े होशियार आदमी हो जी।”

5.

“बावर्ची... बावर्ची को बुलाओ... जल्दी बुलाओ... हम उससे बात करना माँगता है।”

“हुज़ूर हाज़िर हूँ।”

“ये तुमने आज खाने किस क़दर वाहियात पकाये हैं?”

“हुज़ूर...।”

“हुज़ूर के बच्चे... इस प्लेट से बेगम साहिबा ने एक ही निवाला उठाया कि मतली आ गयी.. मैं तुम्हें...।”

“हुज़ूर, मुमकिन है कोई कुसूर हो गया हो... मैं मुआफ़ी चाहता हूँ।”

“मुआफ़ी के बच्चे... उठाओ सब सालन और बाहर फेंक कर आओ।”

“हम नौकर खा लेंगे हुज़ूर।”

“नहीं... बाहर डस्टबिन में फेंक कर आओ। तुम सज़ा के तौर पर भूखे रहो। उठिये बेगम साहब हम 'शीज़ान'[12] चलते हैं।”

6.

“ये तुम्हें चरस की लत कहाँ से पड़ी?”

“क्या बताऊँ यार... अब तो उसके बगैर बिल्कुल नहीं रहा जाता।”

“ये तुम मुझे क्या बताते हो। मैं पूछता हूँ लत कहाँ से पड़ी?”

“जेल में।”

“जेल में? ... वहाँ तो एक मक्खी अन्दर नहीं जाती।”

''मक्खियाँ, मच्छर, खटमल, चूहे तमाम हशरत उल अर्ज[13] जाते हैं। अफ़ीम जाती है, चरस जाती है, मधक[14] जाती है, शराब जाती है, सभी कुछ जा सकती है।''

''कैसे?''

''एक खाली मार्किट है वहाँ... जो ब्लैक मार्किट से ज्यादा ईमानदार है।''

7.

''अम्मा! ... अब गुजारा कैसे होगा। यहाँ लते-बदन पर झूलने का जमाना आ गया है।''

''ठीक कहती हो बेटा।''

''तो क्या होगा?''

''सारा बाजार ही मन्दा है।''

''क्यों?''

''लोगों के पास रुपया नहीं।''

''लेकिन जो मॉल पर इतनी शानदार मोटरें चलती हैं, ये जो लारेंस बाग में ज़र्क बर्क़[16] लिबास नजर आते हैं, ये रुपया कहाँ से आता है?''

''इन लोगों के पास है।''

''तो फिर बाज़ार क्यों मन्दा है?''

''अब इन्होंने आपस ही में हमारा धन्धा शुरू कर दिया है।''

8.

''मकान की बड़ी परेशानी। सर छुपाने के लिए कोई जगह ही नहीं।''

''मामला वाहिद[17] है भाईजान।''

''जी नहीं... आप जरा ख़याल तो फ़रमायें कि मेरा कितना बड़ा कुनबा है। माँ, दो सालियाँ, चार बच्चियाँ, एक बीवी... और दो खालाएँ।[18]''

''और इधर की फेहरिस्त भी सुन लीजिए। दो बीवियाँ, आठ बच्चे, माँ, उसकी ... माँ की दो बहनें।''

''जी नहीं, आप ग़ौर फ़रमाएँ कि यहाँ आने के बाद दो बरस की मुसल्सल तग़ौदौं[19] के बाद मुझे एक छोटा-सा मकान ख़ुदा ख़ुदा करके मिल गया था। लेकिन एक बरस भी इसमें मुश्किल से नहीं गुजरा था कि महकमा... क्या

कहते हैं इसे?''

''महकमा बहालात।''[20]

''हाँ, हाँ वहीं अफसरों ने निकाल बाहर किया। किबला मस्तूरात[21] तक को यूँ चुटकियों में सड़क पर बिठा दिया।''

''और क़िबला मुझे मारा भी गया था। मुझ पर मुकद्दमा भी चला था लेकिन ख़ुदा जाने कब का सबाब[22] काम आ गया कि जेल से जान छूटी। मैंने सोचा जान बची और लाखों पाये।''

''तो अब आप कहाँ रहते हैं।''

''मैंने रहना ही छोड़ दिया है।''

''क्या मतलब?''

''मैंने सबसे कह दिया जहाँ तुम्हारे सींग समायें जाओ, और छोड़-छाड़ चलता बना। वो ख़ुदा मालूम कहाँ हैं। मुझ उनकी कोई परवाह नहीं। सड़क पर कोई कटड़ा मिल जाता है, सो जाता हूँ, नहीं मिलता तो सारा दिन और सारी रात घूमता रहता हूँ।''

''मुझसे ये नहीं हो सकता। मैंने दो-तीन दरख़्वास्तें दी हुई हैं, उनका कुछ तो नतीजा बरआमद[24] होगा।''

''आप वो दरख़्वास्तें ले आयें। मेरी भी दरख़्वास्तें ले आयें और उनको मिलाकर कागज़ का एक घर बना लीजिये।''

9.

''एक अख़बार कुछ लिखता है, एक अख़बार कुछ लिखता है।''

''ये तो है।''

''किसकी मानें किस की न मानें?''

''आप किसी की न मानें। अख़बार पढ़ना ही छोड़ दें।''

''ये कैसे हो सकता है? दुनिया का हाल कैसे मालूम होगा?''

''दुनिया का हाल आपको खुद-ब-खुद मालूम हो जायेगा। ये दुनिया असल में सब बकवास है। असल दुनिया आपकी है जो छोटी है। इसी में मगन रहिये। अगर वो ख़ुद ख़त्म हो जाये तो अल्लाह का शुक्र बना लायें।''

''आप कैसी अजीब बातें करते हैं?''

''तो फिर आप अख़बार पढ़ते रहिये। जिन्ना अवामी लीग है। आजाद मुस्लिम लीग है। इमका लीग है। ढिमका लीग है। मैं तो समझता हूँ सबसे

बेहतर है कि आप ढिमका लीग शुरू कर दीजिये। इसके बानी[25] बन जायें और दरी का कोई रंग मुकर्रर कर लीजिये। एक अख़बार ही जारी कर दीजिये और ऐश कीजिये।''

10.

''आपके बच्चे इतने बड़े हो गये हैं, उनकी तालीम का कोई बन्दोबस्त होना चाहिए।''

''मैं उनकी तालीम का कोई बन्दोबस्त नहीं करना चाहता।''

''क्यों?''

''मैं खुद सारा दिन बन्दोबस्त में उलझा रहता हूँ। एक हजार एक बन्दोबस्त हैं। दर्जी के बिल का बन्दोबस्त, पानी का बन्दोबस्त, किसी अज़ीज़ के घर बदसूरत सा लड़का या लड़की हो तो उसको कुछ देने का बन्दोबस्त, दक़[26] होने वाली है उसका बन्दोबस्त, बीवी को हिस्टीरिया है उसका बन्दोबस्त। अब तो सोच रहा हूँ कि ख़ुदा सबके अन्जाम का बन्दोबस्त भी कर दे। अगर घर में से कोई मर गया तो उसके क़फन-दफ़न का बन्दोबस्त। तो भई मुझसे नहीं हो सकता।''

''आप क़नूती[27] हैं।''

''मैं साहब क़नूती हूँ, पलूती हूँ, सब कुछ हूँ।''

''लेकिन बच्चों की तालीम का तो...।''

''मैं उसकी तरफ ध्यान नहीं दे सकता।''

''ख़ैराती स्कूल में, मेरा मतलब है उनकी फीस मुआफ़ हो सकती है।''

''मुझे मुआफ़ कीजिये। मैं ऐसे स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहता जहाँ से वो हर रोज नई से नई गाली सीखकर आयेंगे। मैं जानता हूँ ये स्कूल जिन्हें मालूम नहीं स्कूल क्यों कहा जाता है, मुगल्लज़[28] के घर हैं, बेराह रवियों की परवरिशगाहें।[29] मेरा घर अच्छा है, अगर वो मरेंगे तो साफ-सुथरे मरेंगे।''

''अजी सुनिये तो।''

''ओह आप... मुझे बड़ा जरूरी काम है, मुआफ़ फ़रमायें।''

''मुआफ़ियाँ तुम लाख माँग चुके हो। वो मेरा सौ रुपये का कर्ज़।''

''मैं दवा लेने जा रहा हूँ। मेरी बीवी बीमार है।''

''मैं इन घिस्सों[30] में नहीं आने वाला... ख़ुदा की क़सम आज मेरा कर्ज़

अदा न हुआ तो सर फोड़ दूँगा।''

''आप क्यों ज़हमत उठाते हैं, मैं ख़ुद ही दीवार के साथ टक्कर मार देता हूँ, ये लीजिये।''

11.

''डार्लिंग।''

''जी।''

''सारी दुकानें छान मारीं तुम्हारे साइज की मेड इन फॉरेन ब्रेज़ियर नहीं मिली।''

''हऊ स्वीट''

''ओह मौला, अपने पीर दस्तग़ीर के सदके कभी तू भी हमें सौ रुपये की शक्ल दिखायेगा।''

''सुना है हुकूमत ग़ौर कर रही है कि तवायफों और कस्बियों[31] को शाही मुहल्ले से निकाल कर एक अलहदा बस्ती में बसा दें।''

''वो कहाँ बसेंगी जी?''

''सुना है दरिया-ए-रावी के पार।''

''ये अच्छा है... वहाँ तुग़यानियाँ[32] और सैलाब[33] आम आते हैं। एक-न-एक दिन बह कर फिर शाही मुहल्ले में आ जायेंगी।''

12.

''दावत तो जनाब ऐसी होगी कि यहाँ की तारीख़[34] में यादगार रहेगी लेकिन अफ़सोस है कि फ्रांस से जो मैंने ख़ासतौर पर शैम्पेन मँगायी थी, वो वक़्त पर नहीं पहुँचेगी।''

1. तीर्थ-यात्रा, 2. कृपा, 3. उचित, 4. विरोध, 5. धमकी, 6. कृपालु, 7. आवश्यकता-पूर्ति, 8. एक कार का नाम, 9. बदल में, 10. बदल में, 11. सामर्थ्य, 12. एक होटल का नाम, 13. धरती के कीड़े-मकौड़े, 14. शराब की एक किस्म, 15. शरीर के कपड़े, 16. तड़क भड़क वाले, 17. स्पष्ट, 18. मौसियाँ, 19. लगातार दौड़-धूप, 20. गृह-विभाग, 21. घर की स्त्रियाँ, 22. पुण्य फल, 23. अर्जियाँ, 24. प्राप्त, 25. आरम्भकर्ता, 26. यक्ष्मा (टी.बी. की बीमारी), 27. निराशावादी, 28. अश्लीलता, 29. कुमार्ग की शरणस्थलियाँ, 30. चालाकियों 31. गंवार औरतों, 32. उफान, 33. बाढ़, 34. इतिहास